

सूँमके घर

धूम

ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ
ॐ

अनुवादकर्ता—

पं. रूपनारायण पाण्डेय

वीर सेवा मन्दिर दिल्ली



क्रम संख्या

काल नं०

खण्ड

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका सोलहवाँ ग्रन्थ

सूमके घर धूम

[स्वर्गीय नाट्याचार्य द्विजेन्द्रलाल रायके ' पुनर्ज
नामक प्रहसनका अनुवाद]

साथ सब ले जायँगे, यों कह रहे थे सेठ,
ना खिलायेंगे न खुद भी खायेंगे भर-पेट ।
मौतका जामा पहिन तब ' हँसी ' आई झूम,
निठुर बनकर लगी करने सूमके घर धूम ॥



अनुवादकर्ता-

पं० रूपनारायण पाण्डेय

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

पौचवीं बार]

आश्विन, १९८८ वि०

[मूल्य चार आने

अक्टूबर, १९३१ ई०

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव-बम्बई



मुद्रक,
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिंटिंग प्रेस,
कान्देवाडी, बम्बई नं. ४

वक्तव्य

डीन स्विफ्टने सचमुच ही एक पञ्चाङ्ग बनानेवाले जीते जागते ज्योतिषीको मुर्दा साबित कर दिया । उसके अत्याचारसे निरुपाय होकर ज्योतिषीने अपने तर्क जीवित साबित करनेके लिए एक वकील नियुक्त किया । कहा जाता है कि तब भी वह ज्योतिषी अपने अस्तित्वको अच्छी तरह प्रमाणित नहीं कर सका । उक्त कथाको लेकर प्रसिद्ध नाटककार स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय महाशयने बंगलामें ' पुनर्जन्म ' नामक एक प्रहसन लिखा था । उसीका यह हिन्दी अनुवाद है । इस प्रहसनका मर्म अगर पाठक जानना चाहें, तो वे अनुग्रहपूर्वक जरा ध्यान देकर इसपर विचार करें । इसमें नीतिके उपदेशका अभाव नहीं है ।

विनीत—

रूपनारायण पाण्डेय

द्विजेन्द्र-नाटकावली

द्विजेन्द्र बाबूके जोड़के नाटक भारतकी किसी भी भाषामें नहीं । नीचे लिखे नाटक प्रकाशित हो चुके हैं । ये सभी देश-प्रेम, विश्व-प्रेम और उच्च श्रेणीके जातीय प्रेमसे भरे हुए हैं । इनका एक सेट मँगाकर अपने पुस्तकालयकी शोभा बढ़ाइए—

ऐतिहासिक		पौराणिक	
दुर्गादास	१)	भीष्म	१।)
मेवाड़-पतन	III=)	सीता	II=)
शाहजहाँ	१)	पाषाणी (अहल्या)	III)
नूरजहाँ	१=)	सामाजिक	
चन्द्रगुप्त	१)	उत्सपार	१=)
राणा प्रतापसिंह	१II)	भारत-रमणी	III=)
ताराबाई	१)	सूमके घर धूम	I)
सिंहल-विजय	१=)	समालोचना	
सुहराब-रुस्तम	II=)	कालिदास और भवभूति १II)	

नोट—हमारा बड़ा सूचीपत्र मँगाइए ।

संचालक—हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई

सूमके घर धूम



स्थान—दौलतरामकी बाहरी बैठक । समय—दिन ।

(फर्श, टेबिल, कुर्सी आदि सब इधर उधर अस्त व्यस्त पड़ा हुआ है ।

पास ही एक पलंग पड़ा है । दीवारमें एक घंड़ी लगी है ।

उसमें सात बजकर सत्रह मिनट हुए हैं ।)

[दौलतरामके विपत्नीक बहनोई बिहारीलाल और दौलतरामकी दुबाराकी

छी चुन्नी, दोनों खड़े हैं ।]

बिहारी—आज वही वैसाख-वदी चौथ है । मैंने पहलेसे ही सबको समझा रक्खा है ।

चुन्नी—मगर अब मैं सोचती हूँ कि इससे फल क्या होगा !

बिहारी—फल ? अगर कुछ न होगा, तो कमसे कम उस बेचारेकी जान तो बच जायगी । जानती हो, असामियोंने उसे (तुम्हारे स्वामीको) मौका पाकर मार डालनेका निश्चय कर लिया है !

चुन्नी—तो इसमें उनका अपराध क्या है ? सूदहीके लिए तो रुपये उधार दिये जाते हैं—सूद न लें ? जब महाजनीकी—

बिहारी—क्या गरीबोंका घर-द्वार बिकवा लेना महाजनी है ? यह तो राहजनी है ! सबेरे उठकर इस डरसे उसका कोई नाम नहीं लेता कि उस दिन खानेको नहीं मिलेगा ! यात्राके समय कोई उसका मुख नहीं देखना चाहता ! बहुत लोग सबेरे-शाम उसकी मौत मनाते हैं ! यह क्या बड़े सुखकी अवस्था है ?

चुन्नी—तो फिर तुमने जो ढंग सोचा है, वह बहुत अच्छा है—भोजनका भोजन और दवाकी दवा ! लेकिन निशाना ठीक बैठे तो ।

बिहारी—ठीक बैठेगा ! सालेको ज्योतिषके ऊपर बड़ा विश्वास है । ज्योतिषीके इस कहने पर उसको पूरा विश्वास हो गया है कि वैसाख-वदी चौथके दिन दोपहरको अपने ही घरमें साँपके काटनेसे उसकी मौत होगी ।

चुन्नी—वे इस समय हैं कहाँ ?

बिहारी—मोती झीलके भीतर, गले भर पानीमें, यह समझकर चुपचाप बैठा है कि पानीके भीतर रहनेसे किस तरह अपने घरमें साँप काटेगा ।

चुन्नी—(हँसकर) वाह !

बिहारी—आज बड़ा मजा होगा ।

चुन्नी—बेशक, बड़ा मजा होगा । मगर अभी तक आये नहीं ।

बिहारी—आता ही होगा ।—तुमसे जो जो करनेको कह दिया है, सो सब याद है ?

चुन्नी—सब याद है ।

बिहारी—अच्छा अब भीतर जाओ ।

चुन्नी—खूब मजा होगा । अब तो देर सही नहीं जाती । (प्रस्थान ।)

बिहारी—दौलतने पूर्वजन्ममें बड़ा तप किया था, इसीसे इस जन्ममें उसे ऐसी सौ मिली है ! सालेके बे-शुमार रुपये हैं, लेकिन अपनी सौ

तकको पेटभर भोजन नहीं दे सकता ! तब भी चुनी हँसती ही रहती है । कोई मजेकी बात होनी चाहिए—हँसते हँसते लोट-पोट हो जाती है ।—साला कंजूसोंका सरदार है ! बुढ़ापेमें ब्याह किया है—एक सुन्दर पढ़ी-लिखी औरत है—और एक महामूर्ख है । मूर्ख न होता, तो जन्मपत्रके फलपर विश्वास करता !

[नन्दू, मोहन, रामचन्द्र और सुन्दरका प्रवेश ।]

बिहारी—तुम लोग आगये ? ठीक समय पर आये—दौलत आता ही होगा ।

मोहन—यहाँ सब ठीक है ?

बिहारी—सब ठीक है । केवल दौलतके दोनों लड़कोंसे अभी नहीं कहा गया । तीन दिनसे वे घर ही नहीं आये । पैसा खर्च न हो, इस लिए साला उनको पढ़ाता लिखता भी नहीं ! ऐसी दशामें यदि वे बिगड़ न जायँ, तो और क्या हो ? दोनों लड़के किसी कामके नहीं रहे ।

मोहन—(सन्देहसे) हाँ !

बिहारी—लेकिन वे भी कहना मान जायँगे । वे भी राह देख रहे हैं कि कब बूढ़ा सूम मरे । बापके मरनेका हाल सुनकर लड़के क्या करते हैं, यह भी साला देख ले ।—लो, वह आ गया दौलतराम ! रामचन्द्र, लेट जाओ—लेट जाओ ।

(रामचन्द्र लेट जाता है ।)

बिहारी—तुम सब रामचन्द्रको घेरकर बैठ जाओ ।

(सब वही करते हैं । बिहारी रामचन्द्रके ऊपर चादर डालता है ।)

बिहारी—खूब दुःख दिखानेके ढंगसे बैठो, रामचन्द्र, हिलो डुलो नहीं ।

(सब उसी तरह बैठते हैं ।)

बिहारी—सब ठीक है ?

सब—हाँ, सब ठीक है ।

बिहारी—तो मैं जाता हूँ । ठीक समयपर आ पहुँचूँगा । अब तुम सब दुःख प्रकट करो ।

[दौलतरामका प्रवेश ।]

दौलत—खूब जान बचाई । जन्मपत्रका हिसाब भी गलत होता है । मैंने सोचा था, ठीक दो-पहरको जान जायगी । (घड़ी देखकर) दो-पहर बीत गई; अब कुछ डर नहीं ।

मोहन—हाय हाय ! बेचारा मर गया !

नन्दू—दोपहरको—

सुन्दर—साँपके काटनेसे !

दौलत०—(घबराकर) कौन मरा ?

मोहन—भाग्यके लिखेको—

नन्दू—कोई नहीं मिटा सकता ।

सुन्दर—तब भी लोग ज्योतिषशास्त्रको नहीं मानते ।

दौलत०—अरे मरा कौन ?

नन्दू—लड़कोंमेंसे तो कोई अभीतक नहीं आया ।

मोहन—कबसे हम लोग बैठे हैं ।

सुन्दर—और कबतक राह देखेंगे ? चलो, लाशको मसान ले चलें ।

दौलत०—अरे भाई, किसकी लाश मसान ले जाओगे ?

मोहन—हाय हाय, सेठ दौलतराम—

नन्दू—आखिरकार—

सुन्दर—मर ही गये !

दौलत०—ऐं ! दौलतराम मर गये ! कौन दौलतराम ?

मोहन—ऐसा घर—द्वार—

नन्दू—दुबारा व्याही परम सुन्दरी स्त्री—

सुन्दर—हाय हाय !

दौलत०—कौन मर गया ?

मोहन—जी, सेठ दौलतराम !

दौलत०—(खफा होकर) दौलतराम क्यों मरने लगे साहब ?

नन्दू—क्यों मरने लगे, सो हम क्या जाने साहब !—लेकिन मर गये हैं !

सब—हाय हाय !

दौलत०—आप लोग कह क्या रहे हैं ? मैं तो जीता जागता खड़ा हूँ ।

मोहन—आप कौन हैं साहब ?

दौलत०—मैं ही तो सेठ दौलतराम हूँ ।

नन्दू—हूँ !

दौलत०—हूँ क्या ?

मोहन—वाह भैया वाह !

दौलत०—आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? आप लोग देखते नहीं कि मैं ही दौलत—

मोहन—चले जाइए साहब ! शोकके समय दिल्लगी करना अच्छा नहीं लगता ।

नन्दू—कोई गंजेड़ी है क्या !

सुन्दर—चल दे यहाँसे ।

दौलत०—कैसी आफत है ! आप लोग क्या पागल हो गये हैं ? मैं ही दौलतराम सेठ हूँ । देख न लीजिए—

मोहन—हाँ ! अच्छा देखें । (देखता है ।)

(नन्दू उसका सिर घुमाकर सिरसे पैर तक निहारता है और
सुन्दर उसके चारों ओर घूमकर देखता है ।)

नन्दू—अजो, देखनेमें तो सेठजीसे बहुत कुछ मिलता जुलता है !

सुन्दर—रूप तो खूब रक्खा है !

मोहन—वाह !

दौलत०—रूप रखना कैसा ?

मोहन—हाँ बना तो खूब है ! मगर यह नाक वैसी नहीं है !

दौलत०—नाक वैसी नहीं है, इसके क्या माने ? (नाकको टटो-
लकर देखना ।)

नन्दू—और रंग—रंग तो कुछ कुछ वैसा ही बना लिया है !

दौलत०—बना लिया है !

सुन्दर—चोटी भी रख ली है !—भई वाह !

मोहन—लेकिन यह नाक—

नन्दू और सुन्दर—हाँ, यह नाक—

दौलत०—नाक क्या हुई ?

मोहन—(सिर हिलाकर) नहीं,—नहीं बनी !

नन्दू—ऊँह !

सुन्दर—असामियोंको धोखा न दे सकोगे ।

दौलत०—क्या ! आप लोग क्या यह कहना चाहते हैं कि मैं
दौलतराम नहीं हूँ ?

मोहन—वाह भैया वाह ! तुम्हारी हिम्मत बेशक तारीफके लायक
है । बोली भी वैसी ही बना ली !

नन्दू—बेशक !

सुन्दर—नकल बुरी नहीं की ।

मोहन—हाय हाय, दुबाराकी ब्याही जोरू—

नन्दू—पढ़ी-लिखी—

सुन्दर—जवान !

दौलत०—जवान हो या बूढ़ी, तुम्हें इससे मतलब ? वह मेरी जोरू है !

मोहन—खूब ! सिर्फ असामियोंको धोखा देनेकी ही नियत नहीं है—

नन्दू—औरतपर भी हाथ सफा करना चाहते हैं हज़रत !

सुन्दर—हूँ !

दौलत०—आप लोग—कौन हैं आप लोग ?

[असामियोंका प्रवेश ।]

पहला असामी—क्यों साहब, सेठ दौलतराम क्या मर गये ?

मोहन—जी हाँ, हम सब उनकी लाशको मसान लिये जाते हैं ।

दूसरा असामी—ओह ! यही वह आदमी है ?

तीसरा असामी—जो सेठजीका रूप रखकर आया है ?

दौलत०—रूप रखकर आया है ?

सुन्दर—हाँ, यह वही आदमी है ।

चौथा असामी—यह कोई ठग है ।

दौलत०—ठग है !—निकल जाओ मेरे घरसे ।

पाँ० असामी—तुम निकल जाओ ।

दौलत०—यह मेरा घर है ।

दू० असामी—ओह ! हम लोगोंको धोखा देने आये हो ? लेकिन हम धोखा नहीं खा सकते ।

चौ० असामी—हम एक पैसा न देंगे ।

दौलत०—नालिश होनेपर एक पैसेसे बहुत अधिक देना पड़ेगा ।

ती० असामी—नालिश करेगा ! हिम्मत तो देखो !

पाँ० असामी—मैं तुमको पुलिसको सिपुर्द कर दूँगा ।

ती० असामी—बुलाओ पुलिस !

चौ० असामी—मैं तुम्हारा सब ढोंग अभी निकाले देता हूँ ।

दू० असामी—जाओजी, पुलिसको तो बुला लाओ ।

(पहले असामीका प्रस्थान ।)

मोहन—चलो नन्दू, हम लोग लाश ले चलें । कहाँ तक राह देखेंगे !

सुन्दर—उठाओ ।

नन्दू—हाँ, उठाओ—

(लाशको उठाना ।)

सब—राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्त है । (प्रस्थान ।)

दौलत०—ये लोग मसान किसकी लाश ले गये ! दौलतराम सेठकी ? तो फिर मैं कौन हूँ ?

दू० असामी—धोखेबाज !

दौलत०—गाली-गुफ्ता न करना, कहे देता हूँ—

ती० असामी—अच्छा रूप रक्खा है !

दौलत०—फिर !

चौ० असामी—मारो सालेको !

दौलत०—अजी साइब—

सब—चुप रहो ।

(क्रमशः सबका मिलकर उसे मारना ।)

दौलत०—सिपाही, ओ सिपाही !

[एक तरफसे दौलतकी लड़की और दूसरी तरफसे बिहारीका प्रवेश ।]

बिहारी—क्या है जी, क्या है ! यह गोलमाल और गुल-गपाड़ा काहेका है ?

दौलत०—आ गये बिहारी ? देखो तो भाई—

सब—चुप रहो ।

बिहारी—मामला क्या है !

दौलत—ये लोग देखो तो—

सब—चुप रहो ।

बिहारी—अरे भाई मामला क्या है ?

दू० असामी—जी, सेठ दौलतराम मर गये हैं ।

ती० असामी—यही सुनकर हम लोग भी आये हैं ।

चौ० असामी—लेकिन बीचमें यह पाजी न जाने कहाँसे सेठ दौलतरामका रूप रखकर आ गया !

दौलत०—लेकिन मैं—

सब—चुप रहो ।

बिहारी—आः—गोलमाल क्यों करते हो साहब ! मैं सब ठीक किये देता हूँ !—सेठ दौलतराम मर गये हैं ?

दू० असामी—जी हाँ ।

बिहारी—लेकिन मैंने तो नहीं सुना ! ऐसा हो ही नहीं सकता !

दौलत०—देखो तो, मैं जीता जागता—

सब—चुप रहो ।

बिहारी—आः, क्या करते हो ! तुमको ठीक माझम है कि सेठजी अन्तकाल कर गये ?

ती० असामी—जी हाँ । आपके आनेके कुछ ही पहले लोग उनकी लाशको मसान ले गये हैं ।

बिहारी—कब ?

चौ० असामी—अभी दो-पहरको ।

बिहारी—कैसे मरे ?

दू० असामी—साँपके काटनेसे ।

बिहारी—दो-पहरको साँपने काटा । ऐसा हो ही नहीं सकता ।

दौलत०—देखो तो भाई, यह अत्याचार देख रहे हो ! मेरे जीते जी ही—

सब—चुप रहो !

बिहारी—दो-पहरको साँपके काटनेसे कैसे मरे ?

दू० असामी—कोई उपाय न था । जन्मपत्रमें लिखा था । क्या करते ?

बिहारी—अच्छा, जन्मपत्र निकालो । (लड़कीसे) ले तो आ बेटी, अपने बापका जन्मपत्र ।

(लड़कीका जाना ।)

बिहारी—जन्मपत्रमें लिखा है ?—ठीक जानते हो ?

चौ० असामी—ठीक ।

ती० असामी—हम लोग क्या झूठ कह रहे हैं ?

दौलत०—लेकिन मैं तो जीता हूँ ।

बिहारी—अच्छा ठहरो, कुंडली देखनेसे आप मालूम पड़ जायगा ।

दौलत०—यह तो बड़ी मुश्किल देख पड़ती है । क्या तुम भी मुझको नहीं पहचानते ?

बिहारी—आप घबराते क्यों हैं साहब, वह देखिए जन्मपत्र आगया ।

(लड़कीका जन्मपत्र लाकर बिहारीको देना ।)

बिहारी—कहाँ लिखा है ?

चौ० असामी—देखूँ—यह देखिए—वैसाख-वदी चौथके दिन दोपहरको साँपके काटनेसे मौत लिखी हुई है । स्पष्ट ही तो लिखा है कि चौथके दिन दो-पहरको केतुकी दशा उतरनेके पहले घरमें साँपके काटनेसे मौत होगी ।

बिहारी—हाँ ठीक तो है । (लड़कीसे) जाओ बेटी, तुम भीतर जाओ ।
(लड़कीका जाना ।)

बिहारी—(चिन्तित भावसे पढ़ते पढ़ते और मूछोंपर हाथ फेरते फेरते) हूँ ! ठीक, लिखा हुआ तो है ।

दौलत०—लेकिन तुम तो भाई, मुझे पहचानते हो ।

बिहारी—(धीरे धीरे सिर हिलाकर) ऊँ, हूँ !—केस (Case) खराब है ।
[मोहनका फिर प्रवेश ।]

मोहन—यह डॉक्टरका दिया हुआ सेठजीका मौतका सर्टिफिकेट भी लीजिए ।

बिहारी—क्या ? सर्टिफिकेट ?

मोहन—हाँ, यह देखिए, दौलतराम सेठके मरनेकी बात लिखी हुई है—
I certify that Seth Daulatram is defunct. He is as dead as doornail.

दौलत०—अरे बापरे !

बिहारी—साहब—आपका केस (Case) धीरे धीरे बहुत ही खराब होता जा रहा है । शायद चल ही नहीं सकता ।

दौलत०—क्यों ?

बिहारी—इधर जन्मपत्र है, उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट है ।

ती० असामी—फिर हम सब लोगोंने अपनी आँखोंसे देखा है कि लोग सेठ दौलतरामकी लाश मसान ले गये हैं ।

बिहारी—सबने देखा है ?

असामी लोग—हाँ, सबने !

बिहारी—ऊँहूँ—केस (Case) किसी तरह टिक नहीं सकता।—
इतनेपर भी अगर कोई जिन्दा रहे तो—

दौलत०—(आप्रहके साथ) तो फिर ?

बिहारी—तो वह जीना नामंजूर ।

दौलत०—बिहारी, तुम भी क्या मुझको नहीं पहचान सकते ?

बिहारी—इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता । पृथ्वीपर कभी कभी दो आदमी बिल्कुल एक ही सूरतके देख पड़ते हैं । जैसे जोड़ियाकी पैदाइश । इस बातका कोई प्रमाण नहीं कि दौलतरामके बापको दो जोड़िया लड़के नहीं पैदा हुए थे । दौलतरामके पितासे कभी यह बात पूछी नहीं गई और इस समय उनसे पूछना असंभव है, क्योंकि वे इस समय स्वर्गमें हैं ।

दौलत—लेकिन मैं तो कहता हूँ ।

बिहारी—आपकी बात मानी नहीं जा सकती । आप कौन हैं, यही तो मामला पेश है । अगर मैंने आपको दौलतराम मान ही लिया, तो आप साबित क्या करेंगे ? आपके कहनेसे कुछ साबित नहीं होता ।

दौलत०—तो फिर कैसे साबित होगा ?

बिहारी—आपके कोई गवाह है ?

दौलत०—नहीं । पर उसकी जरूरत क्या है ?

बिहारी—ये सब लोग एक स्वरसे कहते हैं कि आप सेठ दौलत-राम नहीं हैं । (असामियोंसे) क्यों, आप लोग कहते हैं न ?

सब असामी—हाँ, हम सब कहते हैं ।

दौलत०—आप लोग क्या सचमुच गंभीर भावसे यह बात कहते हैं ?

सब असामी—गंभीर ! जरा इधर देखिए, (अत्यन्त गंभीर भावसे)
आप सेठ दौलतराम कभी नहीं हैं ।

दौलत०—तो क्या सचमुच मैं सेठ दौलतराम नहीं हूँ ?

दू० असामी—कभी नहीं ।

ती० असामी—दौलतरामका क्या ऐसा ही चेहरा था ?

चौ० असामी—दौलतराम बनकर असामियोंको धोखा देने आये
हो भैया !

पौ० असामी—मैं तो देनेके नाम एक पैसा भी न दूँगा ।

दौलत—मैं नालिश करूँगा ।

बिहारी—अदालतमें तुम्हारी नालिश मंजूर ही कब होगी ? इन्होंने
तो सेठ दौलतरामसे कर्ज लिया था । आप तो सेठ दौलतराम हैं ही नहीं ।

दौलत०—मैं सुबूत दूँगा ।

बिहारी—साबित करना मुश्किल हो जायगा । (असामियोंसे)
आप सब लोग शायद गवाही देंगे कि यह सेठ दौलतराम नहीं है ?

सब असामी—(एक साथ) जरूर ।

बिहारी—फिर क्या हो सकता है ?

(दौलतका हताश-भाव दिखाना ।)

बिहारी—साहब, मैं वकील हूँ । आपको दोस्तके तौरपर सलाह
देता हूँ कि ऐसा काम न कीजिएगा, नहीं तो जेल जाना पड़ेगा ।

दौलत०—जेल ?

बिहारी—हाँ, जाली आदमी बननेके जुर्ममें ! चार सालके लिए !

दौलत०—अरे बापरे !

बिहारी—यद्यपि मैं आपको नहीं पहचानता, तथापि दोस्तकी तौर-पर समझाता हूँ कि जान बूझकर इस आफतमें पैर न रखना ! सुनिए, आप किसी तरह पूरी तौरसे यह साबित न कर सकेंगे कि आप दौलतराम सेठ हैं ।

दौलत०—क्यों ?

बिहारी०—इस आपके जन्मपत्रने ही सब मामला बिगाड़ रक्खा है । मला आप ही कहिए, जन्मपत्र कहीं झूठा होता है ?

दौलत०—(सिर खुजाते हुए) हाँ, जन्मपत्र तो कभी झूठा नहीं होता ।

बिहारी—उसके ऊपर डॉक्टरका सर्टिफिकेट—जो लोग मरेको जिला नहीं सकते, मगर जिन्दाको अनायास ही मार डाल सकते हैं । मैं कहता हूँ, आपके सेठ दौलतराम होनेमें घोर सन्देह है, और अगर आप हों भी, तो साबित करना असंभव है ।

दौलत०—तुमको भी सन्देह है ?

बिहारी०—आप ही सोचकर देखिए । आपको खुद क्या सन्देह नहीं होता ? इधर जन्मपत्र और उधर डॉक्टरका सर्टिफिकेट !

दौलत०—डॉक्टरने क्या सचमुच लिखा है कि मैं मर गया ?

बिहारी—यह देखिए न । (सर्टिफिकेट देना ।)

दौलत०—(सिर खुजाते हुए) हाँ, लिखा तो है !

बिहारी—आपके सामने ही वे लोग सेठजीकी लाशको मसान ले गये, और फिर भी आपको अपने सेठ दौलतराम होनेमें सन्देह नहीं होता ?

दौलत०—(धीरेसे) हाँ, ले तो गये हैं । (सिर पकड़कर) मुझे चक्कर आ रहा है ।

[अखबार पढ़ते पढ़ते नन्दूका प्रवेश ।]

नन्दू—

मर गये लाला दौलतराम । जो थे सूम बहुत बदनाम ॥

लेते बेशुमार थे सूद । वैसे हुए नेस्तनाबूद ॥

जोंक बना था वह मनहूस । ऋणी-रक्त-धन लेता चूस ।

कष्ट उठाकर था धन जोड़ा । मरनेपर अब जाकर छोड़ा ॥

जिनको बदा वही खावेंगे । सेठ कियेका फल पावेंगे ॥

बिहारी—यह क्या ! अखबारोंमें भी सेठजीके मरनेका हाल छप गया ?

नन्दू—जी हाँ ।

बिहारी—क्या छोपेके अक्षरोंमें ?

नन्दू—देखिए न ।

बिहारी—(अखबार देखकर दौलतसे) साहब, आपका केस (Case) होपलेस (Hopeless) हो गया है ।

(दौलतराम सिर पकड़कर बैठ जाता है ।)

बिहारी—(असामियोंसे) आप लोग इस समय अपने अपने घर जाइए । मैं अब दौलतरामकी इस्टेट (Estate) को एडमिनेस्ट्रेशन (Administration) में लेनेका प्रबन्ध करने जाता हूँ ।

दौलत०—(उठकर) लेटर ऑफ एडमिनेस्ट्रेशन (Letter of Administration !) कौन लेगा ?

बिहारी—दौलतरामकी विधवा स्त्री । अब मुझे ही इस जायदादका इन्तजाम करना होगा । क्या करूँ ?—(असामियोंसे) तुमपर जो रुपये बाकी हैं, उनका सूद अब तुमसे नहीं लिया जायगा ।

दौलत०—क्यों ?

असामी—जय हो, बिहारी भैयाकी जय हो !

(प्रस्थान ।)

दौलत०—(बिहारीसे) सूद क्यों न लिया जायगा ?

बिहारी—सूद लेनेकी जरूरत क्या है ? सेठजी बहुतसा रुपया छोड़ गये हैं ।

दौलत०—छोड़ गये हैं ! (नम्रता दिखाते हुए) बिहारी, भाई, लेकिन मैं तो मरा ही नहीं ! तुम्हारी कसम मैं नहीं मरा !

बिहारी—मैं क्या करूँ साहब ? कानूनसे आपका जीना साबित नहीं होता (प्रस्थान ।)

[परोसिनोंका प्रवेश ।]

१ परोसिन—अच्छा हुआ ।

२ परोसिन—आफत गई ।

३ परोसिन—बहुत रुपये जमा कर गया है । आष भरपेट नहीं खा सका—

४ परोसिन—अब दस गैर लूटकर खाँयेंगे ।

५ परोसिन—सूमका धन इसी तरह जाता है ।

दौलत०—सुन सुनकर मुझे भी सन्देह हो रहा है कि मैं जीता हूँ या मर गया हूँ ! परोसिनो !—

१ परोसिन—यह कौन है ?

दौलत०—मैं—

२ परोसिन—बहुरूपिया ?

दौलत०—दौलतराम—

३ परोसिन—अरे मर !

दौलत०—सेठ—

४ परोसिन—मर गया !

दौलत०—नहीं, अभी नहीं मरा !

५ परोसिन—निकल यहाँसे मुर्दे !

दौलत०—मैं निकलूँ ?—यह मेरा घर है हरामजादियो, तुम निकलो !

१ परोसिन—यह कौन है रे !

२ परोसिन—हम क्यों निकलें रे ?

३ परोसिन—हाँ, हम क्यों निकलें ?

४ परोसिन—बतला तो सही !

५ परोसिन—मर मुर्दे !

दौलत०—(अवाकू होकर) वाह !

१ परोसिन—कलमँहा मर गया, अच्छा हुआ । (बैठती है ।)

२ परोसिन—लोगोंकी जान बची । (बैठती है ।)

३ परोसिन—दोनों लड़के पेट-भर खायेंगे । (बैठती है ।)

४ परोसिन—लड़की मगर खानेको न पावेगी । (बैठती है ।)

५—परोसिन—बुड़्हेको नरकमें भी जगह न मिलेगी । (बैठती है ।)

दौलत०—बैठ गई ! दौलतराम ! सँभालो, तुम्हारा अस्तित्व ही मिटाया जा रहा है ! अपनेको बचाओ—नहीं तो बस मरे !—(परोसिनोसे) निकलो हरामजादियो यहाँसे; निकलो—निकलो ! न निकलोगी ? अच्छा ठहरो—(बाहरसे लकड़ी लाकर) निकल जाओ, इसीमें खैर है, नहीं तो देखो इसी लकड़ीसे—

१ परोसिन—वाह, खूब बना है !

दौलत०—निकलो !

२ परोसिन—मारेगा क्या ?

दौलत०—मार डालूँगा । (लाठी घुमाते हुए) निकलो !

३ परोसिन—मार तो सही ! देखें तो ! (ईंट उठाना ।)

दौलत०—अरे बापरे ! (पीछे हटता है ।)

४ परोसिन—निकल मुर्दे, निकल, नहीं तो सिर तोड़ दूँगी !

दौलत०—(डरकर) नहीं नहीं—मैं जाता हूँ ।

५ परोसिन—नहीं तो (झाड़ू उहाकर) यह झाड़ू देखी है ?

दौलत०—अरे बचाओ ।

(दौलत भागता है और उसके पीछे दौड़ती हुई परोसिन जाती हैं ।)

[दौलतकी लड़कीका प्रवेश ।]

लड़की—लालाजी ! लालाजी ! अम्मा रो रही है ।

[दौलतरामका प्रवेश ।]

दौलत०—कौन रो रहा है ?

लड़की—अम्मा ।

दौलत०—क्यों ?

लड़की—मैं क्या जानूँ ?

(नेपथ्यमें विलाप ।)

“ अरे तुम कहाँ चले गये—तैयार रसोई छोड़कर कहाँ चल दिये—
ऊँ हूँ हूँ हूँ ! ”

दौलत०—वाह वाह, औरत तकने मरा समझकर रोना शुरू कर दिया !
अरे मुनुआकी अम्मा—मैं जीता हूँ । आया । (लड़कीसे) चलो बेटी ।

(कन्याका जाना और उसके पीछे दौलतरामका जानेकी चेष्टा करना ।)

[दौलतरामके सालोंका प्रवेश । उनके साथ सन्दूक, पिटारे ट्रंक वगैरह हैं ।]

१ साला—ले चलो, ले चलो !

दौलत०—अरे यह क्या है ?

२ साला—अजी कुलीको बुलाओ ?

३ साला—कुली ! कुली ! (प्रस्थान ।)

दौलत०—अरे कुलीको क्यों पुकारते हो ? सब सामान क्यों घरसे बाहर निकाल फेंके देते हो ?

२ साला—ले जायेंगे ।

दौलत०—कहाँ ?

१ साला—कहाँ ? अपने घर, और कहाँ ?—

दौलत०—क्यों ? मेरा सामान अपने घर क्यों ले जाओगे ?

२ साला—तुम्हारा सामान ?

दौलत०—जी ।

१ साला—(व्यंग्यके तौरपर) जी,—लो कुली आ गये ।

[तीन चार कुलियोंके साथ तीसरे सालेका फिर प्रवेश ।]

२ साला—उठाओ, पहले यह लोहेका सन्दूक उठाओ ।

(कुली लोहेका सन्दूक उठानेकी कोशिश करते हैं ।)

दौलत०—खबरदार ! (आगे बढ़ता है ।)

१ साला—चुप रहो ! (मारनेको तैयार होता है ।)

दौलत०—बिहारी ! बिहारी ! (जाता है ।)

(सब सालोंका एक दूसरेको देखकर इशारा करना और हाथकी ओट करके हँसना ।)

१ साला—बिहारीको लेकर फिर आ रहा है ।

२ साला—(कुलीसे) झट उठाओ—

३ साला—जल्दी जल्दी !

[बिहारीके साथ दौलतरामका फिर प्रवेश ।]

दौलत०—बिहारी, देखो तो सही, कैसा अन्धेर है—

बिहारी—(दौलतके सालोंसे) क्यों साहब, आपलोग घरका असबाब कहाँ लिये जा रहे हैं ?

१ साला—क्यों न ले जायँ ? ये सब चीजें अब हमारी बहनकी हैं ।

२ साला—वह अब हम लोगोंके पास रहेगी ।

३ साला—क्योंकि हमारे जीजाजी मर गये हैं ।

दौलत०—देखते हो अंधेर ! मेरे जीते जी यह अत्याचार हो रहा है ।
उधर स्त्री जा रही है और इधर मेरा सब कुछ—(रोता है ।)

बिहारी—भाइयो, दौलतरामकी विधवा इस समय मेरी स्त्री है ।
क्योंकि हाल ही मेरी स्त्री मर गई है और तुम्हारी बहनका पति मर
गया है ।

दौलत०—इससे यह प्रमाणित हो गया कि मेरी स्त्री तुम्हारी स्त्री है ?

बिहारी—कमसे कम यह साबित करना कुछ कठिन नहीं है ।
(दौलतके सालोंसे) आप लोग इस समय घर जाइए । इस लोहेके
सन्दूकको मैं अपने जिम्मे लेता हूँ ।

साले—यह क्या साहब ?

बिहारी—ज्यादह चालाकी न कीजिएगा । मैं वकील हूँ । बस,
चले जाइए ।

साले—अगर न जायेंगे तो ?

बिहारी—तो कानूनी बहससे तुम लोगोंको उड़ा दूँगा । गवाहोंके
द्वारा खाकमें मिला दूँगा ।

साले—अरे बापरे ! चलो, चलो । (जाते हैं ।)

बिहारी—(दौलतसे) अब आप भी जाइए । यह घर अब मेरा
है । सेठ दौलतराम मर गये ।

दौलत०—लेकिन मैं तो मरा नहीं ।

बिहारी—इसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता है । कोई गवाह है ?

दौलत०—क्यों, मेरी स्त्री गवाही देगी ।

बिहारी—अच्छी बात है, अपनी स्त्रीको बुलाइए ।

दौ०—सुनती हो मुनुआकी अम्मा ! जरा इधर आओ । लज्जा करके अब क्या होगा ? मैं जान और मालसे जा रहा हूँ । बाहर आओ ।

[रोते रोते चुन्नीका प्रवेश ।]

मैं हुई अकेली छुटे सहारे सारे ।
इस तरह छोड़कर कहाँ सिधारे प्यारे ?
मैं नहीं जानती राह, भटकना होगा ।
ठोकर खाकर सिर-पैर पटकना होगा ॥
हे प्राणनाथ, दो दरस, तरस कुछ खाओ ।
पैरोंसे ठेलो नहीं, नाथ, अपनाओ ॥
मैं व्याकुल रोती यहाँ तुम्हारे मारे ।
इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—नहीं नहीं, मैं पैरोंसे नहीं ठेकूँगा । आहा, कैसी सती ली है ।

(चुन्नीका रोते हुए गाना ।)

यह कढ़ी, पकौड़ी, बड़े, मुँगौड़ी, भाजी ।
है सभी रसोई अभी बनाई ताजी ॥
बिधना, तूने क्या निठुर ठान ठाना है ?
अफसोस, अकेले मुझे सभी खाना है ॥
तुमको न बदे थे खान-पान ये न्यारे ।
इस तरह छोड़कर कहाँ०

दौलत०—रसोई बनाई है ? मैं भी तुम्हारे साथ खाऊँगा । आहा, कैसी सती लक्ष्मी है !

(चुन्नीका रोते हुए गाना ।)

मल-मलकर नित्य खिजाब अजीब मसाले ।
सन पेसे उजले बाल बनाकर काले ॥
ज्वानीकासा सब रंग ढंग दिखलाना ।
सोनेके तारों बँधे दाँत चमकाना ॥

सपने ऐसी वह हँसी हुई दैयारे !

इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—अरे मैं हँसूँगा । (दाँत निकालकर हँसता है ।)

(चुन्नीका रोते हुए गाना ।)

आकर अब मुझको कौन कहेगा प्यारी ?

बढ़िया ला देगा कौन दुपट्टे सारी ?

एप्सेस, लवेंडर, दूध-पाउडर साबन ।

किससे अब माँगूँ, राम, जड़ाऊ जोशन ॥

मिलकर मरते तो रंज न कुछ फिर था रे ॥

इस तरह छोड़कर कहाँ० ॥

दौलत०—मेरी प्यारी, रोओ मत, मैं आता हूँ । (चुन्नीका हाथ पकड़ता है ।)

चुन्नी—अरे बापरे ! यह कौन है ?

दौलत०—मैं तुम्हारा स्वामी हूँ—तुम्हारा प्यारा हूँ—तुम्हारा नाथ, तुम्हारा प्राणेश्वर, तुम्हारा हृदय-सर्वस्व सेठ दौलतराम हूँ । देखो, जरा इधर देखो ।

चुन्नी—(घूँघट खोलकर देखकर) अरे बापरे ! (मूर्च्छाका अभिनय करती है ।)

दौलत०—ऐं ! यह क्या बात है ?

बिहारी—तू कौन पाजी है ! भले आदमीकी औरतके बदनमें हाथ लगाता है ?

दौलत०—यह तो मेरी ही स्त्री है ।

बिहारी—तुम्हारी ?

दौलत०—हाँ !

बिहारी—तुम बड़े भले आदमी हो !

दौलत०—यह मेरी स्त्री है ।

(चुन्नीका उठना ।)

दौलत०—वह देखो, होश आ गया ।

चुन्नी—मैं उनके बिना नहीं रह सकती ।

बिहारी—धन्य पतिव्रता !

चुन्नी—मैं अबला सरला विह्वला बाला—

बिहारी—हाय हाय !

चुन्नी—दैवकी सताई दुखोंई मुरझाई—

बिहारी—हाय हाय !

चुन्नी—मैं अलबेली नवेली अकेली कैसे रह सकती हूँ ?

बिहारी—अकेली क्यों रहोगी मोहिनी, मायाविनी, बिहारीके जीते जी तुमको काहेकी चिन्ता है ?

दौलत०—बिहारी, तुम्हारी यह हरकत ?

चुन्नी—अभी मेरे पतिका पीछा हुआ है—

बिहारी—मेरी भी खी अभी मरी है—

चुन्नी—मनकी हालत—

बिहारी—बहुत—

दौलत०—खराब है ! सो तो समझा । लेकिन—

बिहारी—(चुन्नीसे) जाओ, अब तुम भीतर जाओ, मैं ब्याहकी तैयारी करने जाता हूँ ।

(चुन्नीका जाना ।)

दौलत०—कैसे ! ब्याह और किया-कर्म एक साथ ही होगा ? हा जगदीश्वर !

बिहारी—लठी कहाँ है ? यह है । (लठी लेना ।)

दौलत०—लकड़ीकी क्या जरूरत है ?

बिहारी—खीको वश करनेकी तैयारी पहलेहीसे कर लें । ५०००) रुपयेका गहना है । १०००) रुपये नकद तो चुन्नीके ही पास हैं ।

दौलत०—देखो, तुम मेरे बहनोई हो, वकील हो । तुम ऐसे नीच नहीं हो सकते कि मेरे जीते ही मेरी स्त्रीसे ब्याह करो ।

बिहारी—नीच कैसा ? विधवासे ब्याह करनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।

दौलत०—किन्तु वह तो मेरी स्त्री है ।

बिहारी—यह बात तो वह खुद नहीं स्वीकार करती ।

दौलत०—ईश्वर ! (रोता है ।)

बिहारी—देखिए साहब, आपको देखकर मुझे दुःख होता है । शायद आप दौलतराम सेठ ही हों । किन्तु प्रमाण नहीं है । कानूनमें आप टिक नहीं सकते । बतलाइए, क्या करूँ ?

दौलत०—यही तो बात है । खीने नहीं पहचाना ! या मैं सचमुच, मर गया हूँ, देखूँ । समस्या यह है कि मैं मर गया हूँ या जीता हूँ ? मैं लहरोंमें पकड़कर तूफानसे भरे संसार-सागरमें बहा बहा फिर रहा हूँ ; या खेल खेल रहा हूँ ? मैं शेर रीछ साँप आदिसे परिपूर्ण बनके घोर घने अन्धकारमें रो रहा हूँ, या गाना गाता हूँ ? चुटकी काटकर देखूँ, (चुटकी काटता है) लगता तो है ! सिर हिला-डुलाकर देखूँ ! (वैसा ही करता है) कुछ भी समझमें नहीं आता !—नहीं, यह न जीना है, न मरना है । यह जीने-मरनेकी एक खिचड़ी है ! कैसी आफत है ! मैंने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि मेरी ऐसी दशा होगी ।—ये कौन हैं ? ये तो सब मेरे सगे हैं ! अच्छा, छिपकर देखूँ, ये क्या करते हैं ? (छिपता है ।)

[बांजे-गाजेके साथ दौलतके नातेदारोंका प्रवेश ।]

१ आदमी—यहीं बैठो (बैठता है)

२ आदमी—हाँ, आज जरा जी भरकर आनन्द मना लें । (बैठता है)

- ३ आदमी—(बैठकर) बुड्ढा अब जाकर मरा ।
 ४ आदमी—मैं तो बहुत खुश हुआ । (बैठता है)
 ५ आदमी—एक पैसा किसीको नहीं दिया । (बैठता है)
 १ आदमी—बड़ा कंजूस था ।
 ३ आदमी—वह समझे था कि मैं कभी नहीं मरूँगा ।
 २ आदमी—तो यह प्रमाणित हुआ कि दौलतराम सेठको भी मौत नहीं छोड़ती !
 ४ आदमी—खूब कहा—हा: हा: हा: हा:—
 ५ आदमी—हा: हा: हा: हा:—
 दौलत०—ये लोग तो खूब खुश देख पड़ते हैं ।
 १ आदमी—बुड्ढा बड़ा सूम था ।
 २ आदमी—आफत गई ।
 दौलत०—एहसानमन्द हूँ ।
 ३ आदमी—बसीयतनामेंमें जरूर हम लोगोंके लिए कुछ लिख गया होगा ।
 दौलत०—(अँगूठा दिखाकर) एक पैसा भी नहीं ।
 ५ आदमी—किसीको तो दे ही गया होगा ।
 दौलत०—किसीको नहीं ।
 ६ आदमी—साथमें तो ले जा सकेगा नहीं ।
 दौलत०—सन्दूकोंको न ले जा सकूँगा, चाबियोंका गुच्छा तो ले जा सकूँगा !
 २ आदमी—दूसरे जन्ममें सिर पीटेगा ।
 दौलत०—सिर पीटनेको तो जी अभी चाहता है ।
 ३ आदमी—आप न कुछ खाया ~~न पिया~~ ~~देखो~~ तो !

दौलत०—भाई, अब ऐसा न होगा । दिनको अंगूर वगैरह मेवा और रातको बढ़िया भोजन !

४ आदमी—अब उसके दोनों लड़के सारी दौलत उड़वेंगे ।

दौलत०—छोड़ जाऊँगा, तब न !

५ आदमी—अच्छा, अब गाओजी ।

दौलत०—अच्छा गाओ, सुनूँ ।

(सबका गाना ।)

गजल ।

प्राण-रक्षामें बड़ी हैं झंझटें, यदि जानते ।
तो न करते हम कभी इस जन्मकी ही चाहना ॥
भोर होते नींद खुलती, हर घड़ी आफत खड़ी ।
आयुको अपनी बिताना, घोर है शव-साधना ।
स्नान करते भूख लगती, है सुलगती आगसी ।
तब जुटाना अन्नका, उसको निगलना चाबना ॥
अन्न चुक जाता, न बुझती पेटकी ज्वाला अहो ।
नोन है तो धी नहीं, संयोग कुछ ऐसा बना ॥
लेटते ही मक्खियाँ दिनको हमेशा दिक करें ।
रातको फिर मच्छरोंका जुल्म होता है घना ॥
हाथ, आधी रातको जेवर जड़ाऊके लिए ।
रूठना, रोना प्रियाका, मिनमिनाना माँगना ॥
चीज लो तो दाम उसके माँगते हैं फिर असभ्य ।
राह रोके हैं महाजन और करते लुचपना ॥
ब्याह करते ही कई बच्चे भी हो जाते हैं हाथ ।
ब्याहनेमें औ पढ़ानेमें दिवाला पीटना ॥

[दौलतरामके दोनों पुत्रोंका प्रवेश ।]

१ पुत्र—जायदाद आधी मेरी है ।

२ पुत्र—एक पैसा भी तुम्हारा नहीं है । लालजी बसीयतनामोंमें सब मेरे नाम लिख गये हैं ।

दौलत०—लिख गया हूँ ? कहाँ ? मुझे तो नहीं याद !

१ पुत्र—बसीयतनामा जाली है । मैं साबित करूँगा ।

२ पुत्र—कभी नहीं !

१ पुत्र—जखूर जाली है ।

२ पुत्र—मैं मिस्टर दासको अपनी ओरसे खड़ा करूँगा ।

१ पुत्र—मैं बैरिस्टर जैक्सनसे पैरवी कराऊँगा ।

२ पुत्र—मैं दस हजार रुपये खर्च करूँगा ।

१ पुत्र—मैं पन्द्रह हजार रुपये उठाऊँगा ।

२ पुत्र—तू बेईमान है !

१ पुत्र—तू धोखेबाज है !

२ पुत्र—तू मूसा है !

१ पुत्र—तू मच्छर है !

२ पुत्र—मेरे घरसे निकल जा !

१ पुत्र—तेरा !—तेरे बापका घर है ?

२ पुत्र—निकलो—

१ पुत्र—चुप रह—

२ नातेदार—अजी झगड़ा क्यों करते हो ? आज खुशी मनाओ । ऐसा आनन्दका दिन, तुम्हारे बाप मरे हैं !

३ नातेदार—हाँ, पेट भरकर खाओ ।

४ नातेदार—जी भरकर आनन्द मनाओ ।

५ नातेदार—नाचो !

२ नातेदार—गाओ !

१ नाते०—मैंने एक गीत जोड़ा है !

२ नाते०—हाँ गाओ, वही गीत—

३ नाते०—कौन ?

१ नाते०—वही जो मैंने जोड़ा है,—‘ बुढ़ा मरा है—’

दौलत०—इसी बीचमें गीत भी बन गया ! बलिहारी !

(सबका गाना ।)

बुढ़ा मरा है बुढ़ा मरा है
बुढ़ा मरा है मरा है मरा है ।

दौलत०—बस, अब तो सहा नहीं जाता ।

(सबका गाना ।)

बुढ़ा मरा है मरा है मरा है ।

(दौलतराम लकड़ी हाथमें लिये आगे बढ़कर गाता है—)

बुढ़ा मरा नहीं बुढ़ा मरा नहीं
देखो अजी अभी बुढ़ा मरा नहीं ॥

१ पुत्र—ऐं ऐं ! यह कौन है ?

२ पुत्र—हाँ, यह कौन है ?

दौलत०—(लड़कोंसे) तुम चाहे जितना आश्चर्य प्रकट करो,
लेकिन मुझको विश्वास है कि बुढ़ा अभी नहीं मरा और वह सशरीर
तुम्हारे आगे खड़ा है ।

१ पुत्र—कैसे ?

२ पुत्र—ठीक तो है, कैसे ?

नातेदार लोग—(दौलतसे) तुम कौन हो जी, हमारे गानेमें
खरमंडल डाल दिया ! निकलो । तुम कौन हो ?

दौलत०—मैं इन दोनों लड़कोंका बाप हूँ !

नातेदार०—बाप ! हो ही नहीं सकता । हम विश्वास ही नहीं करते । अच्छा, तुम साबित करो कि बाप हो ।

दौलत०—सभी कुछ साबित करना होगा ? भाइयो, सुनो—
इस बातको तो कोई साला नहीं साबित कर सकता कि वह बाप है ।
इस बातपर तो विश्वास ही कर लिया जाता है ।

नातेदार०—नहीं, हम लोग विश्वास नहीं करते । निकल जाओ ।

दौलत०—कहाँ जाऊँ ?

नातेदार०—यह हम क्या जनें ? हम नहीं जानते ।

दौलत०—दोनों लड़कोंने पहचान लिया है, मगर मुँहसे स्वीकार नहीं किया । बाहरे कलजुगी लड़के !

नातेदार—(दौलतसे) अजी सोचते क्या हो ? दूधिया भंग है ।
पियोगे ? लो जरासी ।

दौलत०—(कुछ सोचकर) मैं तो जीता हूँ, फिर दूधिया क्यों छोड़ूँ ! (भंग लेकर पीता है ।)

[रण्डीका प्रवेश ।]

१ नातेदार—लो बी गौहरजान आ गई । (गानेके ढंगसे)
“आओ आओ मित्र !”

२ नातेदार—(उसी स्वरमें) “बैठिए सिर आँखोंपर ।”

३ नातेदार—(उसी स्वरमें)

इश्ककी गोली बनाकर बामपर फेंका करूँ ।

तू मुझे देखे-न देखे, मैं तुझे देखा करूँ ॥

४ नातेदार—ठीक नहीं हुआ (दूसरे स्वरमें)—

इश्ककी गोली बनाकर बामपर फेंका करूँ ।

तू मुझे देखे-न देखे, मैं तुझे देखा करूँ ॥

५ नातेदार—दे-ए-ए-ए-ए-ए—

दौलत०—वाह, यहाँ तो सभी उस्ताद हैं ।

१ नाते०—देखते क्या हो !

२ नाते०—बी गौहरजानको गाने दो ।

दौलत०—(भंगके नशेमें) लेकिन मैं दौलतराम सेठ—

३ नाते०—पहले मैं गाऊँगा !—खा-आ-आ-आ-आ— !

४ नाते०—चुप ।—कहाँ ऊँ-ऊँ ।

५ नाते०—गाओ जान, कोई नाटककी चीज गाओ—

गौहर०—अच्छा, सुनिए—

बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे ।

१ नाते०—वाह वाह वाह वाह ।

२ नाते०—ठहरो बीबी, अन्तरा मुझे कहने दो ।—

बड़े सबेरे जो कोई छाने, बाकी लंबी दीठ ।

उड़त चिरैया वह पहचाने गिरी सड़कसे ईंट ॥

१ नाते०—सबेरे फेर छेनेगी भंग, सबेरे फेर छेनेगी—

३ नाते०—सुनो—

दुसरे पहरें जो कोई छाने, बाके लंबे कान ।

तबा कटोरा कलसी बेची, धर लोटेपर ध्यान ॥

१ नाते०—सबेरे फेर छेनेगी भंग, सबेरे फेर छेनेगी ।—

२ नाते०—अरे मेरी भी तो सुनो—

तिसरे पहरें जो कोई छाने, ज्यों भादौंकी कीच ।

घरके जानें मर गये और आप नशेके बीच ॥

दौलत०—अरे घरके जानें तो जाना करें, पर न मैं मरा हूँ और
न नशेके बीचमें हूँ !—

१ नाते०—अरे चुप, सबेरे फेर छेनेगी भंग, सबेरे—

५ नाते०—मेरी क्या यों ही रह जायगी । सुनो—

चौथे पहरे जो कोई छाने, बच्चा आपी आप ।

बे-जोरू बे-ससुरेके हो, छै बच्चेका बाप ॥

दौलत०—वाह बेटा, तुम्हारी खूब रही !

१ नाते०—अररररर सबरे फेर छुनेगी भंग—

गौहर०—बूटी पिलाके लुभाय गया कोई मुझे ।

(सबका नाचना । साथ ही साथ दौलतका भी नाचना और गिरना ।)

नातेदार—लो बी गोहरजान, एक ठेर हुआ तुम्हारे गानसे ।

दौलत०—(पड़े ही पड़े नशेमें) अबे चुप—मैं सेठ—दौलत-
राम हूँ । या नहीं ?—फिर—मैं कौन हूँ ? कौन भाई दौलत, आ गये !

[बिहारी, दारोगाके वेषमें रामचन्द्र, एक हवालदार और दो सिपाहियोंके वेषमें
नन्दू, मोहन और सुन्दरका प्रवेश ।]

बिहारी—हाँ आगया दादा—

नातेदार—अरे पुलिस आ गई, भागो भागो ! (भाग जाते हैं ।)

बिहारी—(दारोगासे) यही दौलतराम बनकर आया है—असा-
मियोंको धोखा देनेके लिए ।

दारोगा—क्या तुम कहते हो कि मैं सेठ दौलतराम हूँ ?

दौलत०—(हाथ जोड़कर) जी जमादार साहब ।

(सिपाहियोंका पकड़ लेना ।)

दारोगा—पकड़ो इसको ।

दौलत०—जी मैं—

दारोगा—दौलतराम सेठ है !

दौलत०—(काँपता हुआ) जी, कभी किसी जन्ममें नहीं !

दारोगा—तब उसके जैसा रूप रखकर क्यों आया ?

दौलत०—जी—

दारोगा—झूठ, सच बोलो ।

दौलत०—दारोगा साहब, मेरे कहनेके पहले ही आपने मेरी बातको झूठा ठहरा लिया !

दारोगा—वह मैं जानता हूँ ।

दौलत०—दारोगा साहब, यह तो मैं जानता था कि पुलिसके आदमी सर्वशक्तिमान् होते हैं, लेकिन यह न जानता था कि सर्वज्ञ भी होते हैं ।

दारोगा—सच बोलो । (रूलका हूला मारना ।)

दौलत०—जो वही कहनेवाला था, लेकिन इस मारसे तो सच बात भूली जातो है । अब मैं क्या कहूँ, तो आप खुश हों ?

दारोगा—कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ । (रूल दिखाता है)

दौलत०—कभी नहीं । मारो न बाबा !

दारोगा—फिर तुम कौन है ?

दौलत०—संपत सेठ—

दारोगा—संपत सेठ कौन ?

दौलत०—दौलत सेठका छोटा भाई ।

दारोगा—तो फिर दौलत सेठके जैसा चेहरा बनाकर क्यों आया ?

दौलत०—जी—(सोचता है)

दारोगा—सच बोलो । (रूलका हूला मारता है) उसका ऐसा चेहरा बनाकर—

दौलत—हम दोनों जोड़िया भाई थे ।

दारोगा—चुप रह ।

दौलत०—अच्छा चुप रहूँगा ।

दारोगा—(बिहारीको दिखाकर) ये कौन हैं ?

दौलत०—पहले थे मेरे—अर्थात् दौलतरामके बहनेई; लेकिन अब उसकी बीके पति हैं !

दारोगा—यह तुम सच कह रहे हो ?

दौलत०—जी, मैं झूठ कभी कभी बोलता हूँ ।

दारोगा—नाक रगड़ो, कान पकड़ो ।

दौलत०—क्यों जमादार साहब ?

दारोगा—चुप रहो, कान पकड़ो ।

दौलत०—अच्छा साहब । (वही करता है)

दारोगा—कहो, मैं कभी किसी जन्ममें सेठ दौलतराम नहीं था ।

दौलत०—ऐसा ही होगा साहब ! मैं कभी न था ।

बिहारी—बॉर्ड बाय लिमिटेशन (Barred by limitation)

दारोगा—अच्छा, छोड़ दो ।

बिहारी—(दारोगासे) चलिए, कुछ जल-पान कर लीजिए ।

दौलत०—और मेरी भूतपूर्व विधवाके साथ दारोगा साहबकी जान-पहचान भी करा देना ।

दारोगा—चुप रहो !

दौलत—(डरकर) जी !

(दौलतके सिवा सब चल देते हैं ।)

दौलत०—(आप ही आप) अन्तको रूलके हूँसे यह साबित हो गया कि मैं दौलत सेठ नहीं हूँ । कहा ही है कि मारके आगे भूत भागते हैं । नहीं भई, मैं मर गया था, यह बात झूठ नहीं है । हाँ, मर गया था । यह मेरा पुनर्जन्म है ! आज नया अनुभव और नया त्रिधास पाकर मैं फिर जी उठा हूँ । मरनेके बाद जो कुछ होनेवाला था, वह जीतेजी अपनी आँखोंसे ही देख लिया । गरीबोंको सताकर

दौलत०—बड़ी कृपा हुई !

बिहारी—अच्छा, सेठजी, आपको कुछ शिक्षा मिली या नहीं !

दौलत०—बहुत कुछ ।—यह मेरा पुनर्जन्म है ।

गाना ।

गजल (सोहनी)

व्यर्थ ही तूने जमा जोड़ी मिला सुख क्या भला ?

हाय, इसके वास्ते काटा अनेकोंका गला ?

गाड़ना, संदूकमें रखना, जमा-करना वृथा ।

कालके आगे कहीं चलती किसीकी है भला ?

जो न परउपकारमें या भोगमें दौलत लगी ।

तो कहो, फिर साथ उसको कौन अपने ले चला ?

दान या तो भोग या फिर नाश धनकी गति कही !

जो न देता और खाता, नाश ही उसको फला ॥

सुमके पीछे सभी धन दस जगह लुट जायगा ।

इस लिए खा ले, खिला ले और बन ले मन-चला ॥

(पर्दा गिरता है ।)



